REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 10 | JULY - 2017

भारतीय लोकतंत्र में बुनकर समाज की सामाजिक एंव आर्थिक स्थिति

गोविन्द सोनकर
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ।

सारांश :

इस पेपर का मुख्य उद्देश्य भारतीय लोकतंत्र में बुनकर समाज की सामाजिक एंव आर्थिक स्थिति के विषय में संक्षिप्त जानकारी प्रदान करने से हैं । समकालीन समय में विश्व के सबसे बड़े एंव सफल लोकतंत्र में बुनकर समाज के राजनीतिक स्थिति, हासिएकरण एंव मनोदशा के ऊपर भी फोकस किया गया हैं ।

संकेत शब्द : लोकतंत्र, बुनकर समाज, राजनीतिक शासन ब्यवस्था, मूल्य, अधिकार, हासिएकरण ।

परिचय :

लोकतंत्रीय शासन प्रणाली, अपनी उत्पति के समय से ही एक सर्वाधिक लोकप्रिय राजनीतिक शासन-ब्यवस्था रही है । समकालीन समय में देखा जाय तो आज इक्सवी शताब्दी में विश्व के अधिकांश देशों की राजनीतिक ब्यवस्था , लोकतंत्रीय-मूल्यों पर आधारित हैं । किसी भी समाज में प्रजातान्त्रिक शासन-ब्यवस्था को वास्तविक धरातल पर तब तक स्थापित नहीं किया जा सकता, जब तक की किसी समाज के हासिएकरण पर रहने वाले शेष अंतिम ब्यक्ति तक इसके मूल्यों एंव अधिकारों की पंहुच सुनिश्चित न हों।

वर्तमान परिप्रेक्षय में देखा जाय तो आज भारत, विश्व का सबसे बड़ा एंव सफल लोकतान्त्रिक देश हैं, हालांकि १९४७ के आजादी के पश्चात जब राजनैतिक-वर्ग द्वारा स्वतन्त्र भारत में लोकतान्त्रिक शासन-ब्यवस्था को अपनाने का निर्णय लिया गया, तब प्रजातंत्र के अनेक विशेषज्ञों एंव विद्वानों ने इस निर्णय की खुले दिल से आलोचना की, परन्तु सात दशकों की भारतीय लोकतंत्र की शासन-ब्यवस्था की यात्रा अपने आप में रोचक रहीं हैं । समकालीन समय में, हमारे सामने सबसे अहम् प्रश्न यह हैं कि क्या जिन उद्देश्यों एंव लक्ष्यों की पूर्ति करने हेतु भारतीय प्रजातान्त्रिक शासन व्यवस्था को अपनाया गया हैं ? क्या सचमुच उन उद्देश्यों एंव लक्ष्यों को प्राप्त करने में यह सफल हो पाया हैं ? क्या भारतीय लोकतंत्र, समाज के प्रत्येक वर्ग, तबके, समुदाय एंव अंतिम शेष ब्यक्ति तक पहुच पाया हैं या फिर एक कोरी कल्पना बनकर रह गया हैं ?

इन प्रश्नों का जब हम सटीक एंव यथार्थ उत्तर ढूढ़ने का प्रयास करते हैं तो यह पाते है कि कुछ हद तक यह सफल भी हुआ हैं एंव कुछ हद तक असफल भी हुआ हैं। परन्तु इस सन्दर्भ में इस पेपर का दृष्टिकोण भारतीय लोकतंत्र के अन्तर्गत बुनकर समाज की सामाजिक, आर्थिक एंव राजनीतिक स्थिति का संक्षिप्त अवलोकन करने का प्रयास किया गया गया हैं ।

अपने अध्ययन एंव फील्ड सर्वेक्षण के दौरान हमें यह देखने को मिला हैं कि बुनकर समाज जो कि आज भी इक्सवी शताब्दी एंव वैश्वीकरण के दौर में विकास की मुख्य धारा से हटकर कोसों दूर हासिंयेकरण पर रहकर अपना गुजर-बसर कर रहा हैं एंव भारतीय लोकतंत्र की सर्वमान्य परिभाषा से बिलकुल बाहर हैं। समकालीन समय में बुनकर समाज की सामाजिक एंव आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय एंव चिंतनीय हैं। यद्पि राज्य एंव केन्द्र सरकार दोनों के द्वारा बुनकर समाज के कल्याण एंव उन्नति के लिए अनेकों नीतियों एंव कानूनों को बनाया गया हैं परन्तु सच्चाई यह हैं कि सरकार के द्वारा बनाये गये नीतियों का लाभ इन्हें नही मिल पा रहा हैं। वर्तमान समय में बुनकर समाज के लोगों में आत्महत्या करने की प्रवृप्ति में जो बढोतरी हुई हैं इसका मुलभूत कारण भी यही हैं कि सरकारी नीतियों का फायदा जिनको मिलना चाहिए उनको ना मिलकर इसका लाभ केवल इस ब्यवसाय से जुड़े बड़े मिल् मालिको, बिचौलियों, मध्यस्थों एंव कम्पनी एजेंटो को ही मिल पा रहा हैं। राजनीतिक जागरूकता एंव उदासीनता का अभाव होने के कारण एंव राजनीतिक नेताओ के ध्यान न देने के कारण आज बुनकर समाज निम्न स्तर का जीवन जीने को विवश हैं। उचित मार्केटिंग ब्यवस्था न होने के कारण इन्हें अपने प्राडक्ट का सही एंव वाजिब हक़ एंव मूल्य भी नही मिल पाता हैं। विधान सभा एंव लोकसभा में इनका अपना प्रतिनिधि न होने के कारण इनकी समस्याओ को पुरजोर तरीके एंव सलीके से नही उठाया जाता हैं, जिसके कारण यह ब्यवसाय आज पहले की तुलना में बहुत ही पिछड़ गया हैं जो कि कभी लाखो लोगो का ब्यवसाय हुआ करता था।

सही एंव सच्चे अर्थो में भारतीय लोकतंत्र अपने वास्तविक रूप को तभी धारण कर सकता है, जब यह अपने अन्दर समाज के सभी लोगो का समावेश कर सके एंव सभी को विकास की मुख्य धारा से जोड़ सके नही तो यह एक कोरी कल्पना बनकर रह जायेगा। बुनकर समाज भी इसी लोकतंत्रीय शासन-ब्यवस्था का एक अहम् हिस्सा हैं इन्हें अपने हक़ की लड़ाई स्वंय लड़कर लेनी होगी, तभी इनका विकास हो सकता हैं अन्यथा नही।

कालीन का इतिहास :

आज से लगभग २४०० वर्ष पहले सेंटपीटर्स वर्ग के हर्मिटाज म्यूजियम में विश्व की पहली कालीन पाई गयी थी। यह भी कहा जाता है कि अलेक्जेंडर जनरल सेलुकास ने अपनी बेटी की शादी में चन्द्रगुप्त मौर्य को आज से लगभग ३२० बी सी पहले एक गलीचा उपहार में उनको दिया था। इस समारोह के उपरांत इसका प्रसार विश्व के अन्य जगहों जैसे एशिया, सीरिया, बेबीलोन, कांधार एंव ईरान में हुआ।

भारत में कालीन की बुनाई बहुत ही प्राचीन समय से की जा रही हैं यह एक ऐसा ब्यवसाय है जो कि ग्रामीण एंव शहरी दोनों क्षेत्रों में लाखो लोगो के आजीविका का मुख्य संशाधन हैं। भारत, विश्व का एक ऐसा प्रजातांत्रिक देश है जो कि अपने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एंव सांस्कृतिक विविधिता के लिए सम्पूर्ण संसार में लोकप्रिय एंव प्रसिद्ध हैं, और सबसे बड़ी खासियत यह है कि यहाँ का हथकरघा उधोग एंव कालीन पुरे विश्व में प्रसिद्ध हैं। यधपि भारत में कालीन कि बुनाई का काम सोलहवीं शताब्दी में प्रारम्भ किया गया, जब यहाँ पर मुग़ल साम्राज्य का शासन था। महान सम्राट अकबर के शासन काल में पर्शिया से कुछ बुनकरों को कालीन की बुनाई करने हेतु भारत लाया गया, जिसका विवरण हमें अकबर के शासन काल में रहें दरबारी कवि अबुल फजल के "आईने अकबरी" में देखने को मिलता हैं। कालीन जिसे की 'गलीचा' के नाम से भी जाना जाता हैं।

कालीन बुनाई के उपकरण एंव डिज़ाइन :

कालीन की बुनाई प्राय: हाथों एंव मशीनों दोनों माध्यमों से की जाती हैं। इसकी बुनाई करने में कैची, पंजा, वूल, छुरा, ए हेअवी क्रवेड एंड वुड का उपयोग किया जाता हैं। वर्तमान समय में मशीनों के माध्यम से भी इसकी बुनाई की जा रही हैं, परन्तु यह बहुत ही खर्चीली हैं। बाज़ार में अनेको तरह की कालीन देखने को मिलती हैं, जो कि अलग-अलग डिज़ाइन में उपलब्ध हैं, उनमे से कुछ प्रमुख रूप से जैसे एंटिक पर्शियन डिज़ाइन, वेस्टर्न डिज़ाइन, स्पेशल डिज़ाइन, चाँद-चौथाई डिज़ाइन एंव साधारण डिज़ाइन हैं। ये सभी डिज़ाइन पर्शिया से भारत में लायी गयी हैं।

उत्पादन के प्रमुख क्रेन्द :

भारत में कालीन बुनाई के प्रमुख केन्द्र के रूप में पूर्वी उत्तस्प्रदेश का भदोही, मिर्जापुर एंव वाराणसी जिला पुरे विश्व में काफी लोकप्रिय एंव प्रसिद्ध है । यह भी कहा जाता है कि ये कालीन बुनाई के सबसे पुराने केंद्र हैं। इसके अलावा उत्तर-प्रदेश के आजमगढ़, सोनभद्र, इलाहाबाद एंव जौनपुर जिले में भी कालीन की बुनाई की जाति हैं।

इसके अतिरिक्त भारत के अन्य भागों में जैसे कि बिहार में समस्तीपुर, गया, ओबरा एंव मधुबनी, जम्मू एंव कश्मीर में श्रीनगर, अनन्तनाग, बारामूला, बडगाम, कुपवारा एंव पुलवामा, आसाम, पाण्डिचेरी, पश्चिम-बंगाल में दार्जलिंग, महाराष्ट्रा में नागपुर, पंजाब में अमृतसर, कर्नाटक में मंगलौर, तमिलनाडू में मद्रास एंव वालजपेट, हिमाचल-प्रदेश में धर्मशाला एंव डलहौजी, मध्य-प्रदेश में ग्वालियर, हरियाणा में पानीपत, राजस्थान में जयपुर, अलवर, टोंक, बीकानेर एंव बाड़मेर, आंध्र-प्रदेश में वारंगल एंव इल्लूर और लद्दाख में लेह कालीन बुनाई के केंद्र स्थित हैं ।

मुख्य निर्यातक देश :

समकालीन समय में भारत, विश्व का दुसरा सबसे बड़ा गलीचा या कालीन का निर्यातक देश हैं, वही संसार में ईरान का प्रथम स्थान हैं । उत्तर-प्रदेश के भदोही एंव मिर्ज़ापुर, दो ऐसे जिले है, जहा कि अस्सी प्रतिशत कालीनो का विश्व के विभिन्न भागों में निर्यात कर दिया जाता हैं । भारत के पूर्वी उत्तर- प्रदेश एंव विभिन्न भागों में तैयार किये गए कालीनों के प्रमुख निर्यातक देशों में क्रमशः जर्मनी, अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, सऊदी अरबिया, स्विट्ज़रलैंड एंव ग्रेट-ब्रिटेन हैं ।

महत्व एंव उपयोग :

वर्तमान समय में कालीनों का महत्त्व दिन-प्रतिदिन बड़ता ही जा रहा हैं । विशेष रूप से इसका उपयोग घरों को सजाने एंव एक आरामदायक वस्तु के रूप में किया जा रहा हैं । इसके अतिरिक्त इसका उपयोग सिनेमा हालो, पुस्तकालय, आधुनिक ब्यायामशाला, संसद भवन, शादी समारोह, सेमिनार रूमों, अवार्ड समारोहों, घरों के बहार एंव अन्दर एक अस्थेटिक सुन्दरता प्रदान करने के लिए किया जा रहा हैं । रूम को गर्म एंव लक्जरी बनाने में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान रहता हैं ।

बुनकर समाज की स्थिति :

समकालीन समय में भारतीय लोकतान्त्रिक देश में बुनकर समाज की सामाजिक, आर्थिक एंव राजनीतिक स्थिति काफी दयनीय एंव चिंतनीय हैं। कालीनों की बुनाई करने वालो को समाज में हेय की दृष्टि से देखा जाता हैं, क्योकि ऐसा माना जाता है कि कालीन की बुनाई का काम प्रायः समाज के कमजोर एंव दीनहीन लोग ही करते हैं, जिनकी सामाजिक एंव आर्थिक स्थिति ठीक नही हैं । परन्तु सच्चाई यह भी है कि इस पेशा से समाज के संभ्रांत एंव शक्तिशाली लोग भी जुड़े हुए है जिन्हें मिल् मालिक एजेंट, बिचौलिए एंव लूम ओनर्स कहा जाता हैं । भारतीय प्रजातंत्र में बुनकर समाज एक उपाश्रित वर्ग का जीवन जीने को विवश हैं । राज्य के द्वारा बनाये गये कल्याणकारी नीतियों का लाभ इन्हें नही मिल पाता हैं, प्रायः ऐसा देखा गया हैं कि केंद्र सरकार एंव राज्य सरकार दोनों के द्वारा समय-समय पर बहुत सारी नीतियां बुनकर समाज के कल्याण के लिए बनाई गयी हैं, परन्तु सच्चाई इसके बहुत ही विपरीत हैं । इन नीतियों का लाभ इस ब्यवसाय से जुड़े मिल् मालिक कम्पनी एजेंट्स, बिचौलिए एंव बड़े-बड़े लूम मालिको को ही मिल पाता है, क्योकि राजनीतिक रूप से ये लोग काफी सक्रिय एंव जागरूक है एंव बैंक अधिकारियों से इनके ब्यक्तिगत सम्बन्ध बहुत ही अच्छे हैं ।

आर्थिक दुर्दशा के मुलभूत कारण एंव समाधान

भारतीय समाज में बुनकर समाज के आर्थिक दुर्दशा के पीछे निम्नलिखित कारण हैं जिनका समाधान होना अति आवश्यक हैं ।

1. भारतीय प्रजातंत्र में बुनकर समाज के आर्थिक पिछड़ेपन का मुख्य कारण यह है कि इन्हें अपने प्राडक्ट का सही एंव उचित मूल्य नही मिल पाता हैं, क्योकि उपयुक्त बाजार की ब्यवस्था न होने के कारण इन्हें अपने प्राडक्ट की सही कीमत नही मिल पाती हैं ।

2. इस पेशा से जुड़े लोगो में राजनीतिक उदासीनता एंव जागरूकता की कमी होने के कारण इनका शोषण कम्पन्नी एजेंट, बिचौलिये, साहूकार एंव मिल मालिको के द्वारा आसानी से किया जा रहा हैं।

3. अंतरराष्ट्रीय मार्केट एंव वैश्विक बाजार में कालीनों की कीमत बहुत ही अधिक हैं, परन्तु इसमें काम करने वाले लोगो की सामाजिक एंव आर्थिक स्थिति ठीक नही हैं, क्योकि प्राय: ऐसा देखा गया है कि इसमें काम करने वाले लोग ठेकेदारी के रूप में काम करते हैं और इन्हें अपने प्राडक्ट को बेचने हेतु मिल मालिको एंव लूम ओनर्स के ऊपर आत्मनिर्भर रहना पड़ता हैं जो कि इनका शोषण करते रहते हैं ।

4. बैंक अधिकारी एंव कर्मचारी भी बुनकर समाज का शोषण आसानी से करते रहते हैं क्योकि बैंक इन्हें लोन आसानी से नही देता हैं, बैंक लोन के लिए इन्हें एक मोटी रकम रिश्वत के रूप में बैंक मनेजरों को देना पड़ता हैं तभी इन्हें लोन मिलता हैं अन्यथा नही ।

5. साहुकारो के द्वारा भी इनका शोषण किया जाता हैं, क्योकि साहुकारो के द्वारा लिया गया पैसा सही समय पर नही चुकता करने पर ब्याज के रूप में मोटी रकम इन्हें अदा करनी पड़ती हैं ।

6. इनका अपना ट्रैड यूनियन न होने के कारण इनकी सम्सयाओ को उठाने वाला भी कोई नही हैं जिसके कारण बुनकर समाज एक उपाश्रित वर्ग का शिकार है । बुनकर समाज के लोगो को अपने हक़ की लड़ाई स्वंय लड़नी होगी अन्यथा इन्हें हासिएकरण पर रह कर ही अपना जीवन ब्यतीत करना पड़ेगा ।

7. चुनाव के समय विभिन्न क्षेत्रीय एंव राष्ट्रीय दल केवल वोट लेने के समय ही इनकी समस्याओं को पुरजोर तरीके एंव सलीके से उठाते है । चुनावी माहौल में बुनकर समाज को ऐसे राजनीतक दलों से सावधान रहते हुए वोट करनी चाहिए। उन्हें उसी दल को अपना मत देना चाहिए जो सही में बुनकरों का कल्याण कर सके ।

8. शिक्षा जो कि किसी भी समाज के विकास एंव उत्थान के लिए रामबाण हैं, बुनकर समाज शैक्षणिक रूप से भी काफी पिछड़ा हुआ हैं। अधिकांश लोग शिक्षा से वंचित हैं, जिसके कारण ये विकास कि मुख्य धारा से कोसों दूर हैं। 9. बुनकरों का संसद एंव विधानसभा में उचित प्रतिनिधितत्व न होने के कारण ये अपनी मागों को प्रभावी ढंग से नही उठा पाते हैं । अत: बुनकर समाज के सशक्तिकरण, उन्नति एंव कल्याण हेतु लोकसभा एंव विधानसभा में इनका प्रतिनिधी होना अतिआवश्यक हैं । जिससे कि ये अपनी आवश्यकताओ एंव मागों को सरकार के समक्ष आसानी से रख सके एंव मनवा सके और अपने हित में गवर्नमेंट पॉलिसीज को बनवा सके ।

10. वर्तमान समय में कालीन उधोग, बाल बंधुआ मजदूरी से भी ग्रसित हैं जिसे समाप्त करने हेतु रुगमार्क, स्टेप, कालीन, केयर & फेयर (RUGMARK, STEP, CARE & FAIR), बंधुआ मुक्ति मोर्चा इत्यादि संस्थाये इस दिशा में साकारात्मक रूप से काम कर रही हैं ।

11. समकालीन समय में लोकतान्त्रिक शासन ब्यवस्था में बुनकरों की राजीनीतिक हिस्सेदारी में कमी देखने को मिलती है जिसके कारण भी ये लोग आज के वैश्वीकरण एंव उदारीकरण के दौर में भी उपाश्रित वर्ग का जीवन जीने के लिए विवश है । अत: इन्हें लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था में अपने हक़ की लड़ाई खुद लड़कर लेनी पड़ेगी । किसी और के सहारे इनका विकास सम्भव नही हो सकता हैं ।

निष्कर्ष:

उपरोक्त विवेचनों एंव विश्लेषणों से स्पष्ट होता हैं कि भारतीय अर्थव्यवस्था एंव भारतीय प्रजातंत्र के आर्थिक विकास में बुनकर समाज का अपना महत्वपूर्ण योगदान हैं, जिसे इन्कार नही किया जा सकता है । विदेशी मुद्रा के संचयन में भी इनका अपना उल्लेखनीय योगदान हैं । परन्तु सच्चाई यह भी है कि जहा एक तरफ इस व्यवसाय से जुड़े कमजोर तबको एंव समुदायों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एंव शैक्षणिक स्थति काफी दयनीय है । वही दूसरी तरफ इस पेशा से जुड़े मिल मालिको, कपन्नी एजेंट, साहूकारों एंव मध्यस्थों की सामाजिक, आर्थिक एंव राजनीतिक स्थिति इनसे काफी अच्छी हैं । अत: एक ऐसी प्रजातान्त्रिक शासन व्यवस्था होनी चाहिए जो कि समाज के हर कमजोर, दीनहीन, असहाय एंव उपाश्रित वर्ग को लोकतान्त्रिक मूल्यों, अधिकारों एंव विकास की मुख्य धारा से जोड़ सके, बुनकर समाज भी इसी लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था एंव राजनीतिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं, जिनको कि विकास की मुख्य धारा से जोड़ा जाना अति आवश्यक है, नही तो प्रजातंत्र अपने वास्तविक अर्थों से करोड़ो मील दूर चला जायेगा ।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. शर्मा, अलख. एन, राजीव शर्मा एंव निखिल राज. (२००४). 'चाइल्ड लेबर इन कारपेट इंडस्ट्री, इम्पैक्ट ऑफ़ सोशल लबेल्लिंग इन इन्डिया' नई-दिल्ली, इंस्टिट्यूट फॉर ह्यूमन डेवलपमेंट पृष्ठ संख्या- ४८ - ८६ .
2. सिंह, आर. के. एंव आर. के. राम. (१९८१). 'सेन्सस ऑफ़ इन्डिया, उत्तर-प्रदेश हेंडीक्राफ्ट सर्वे रिपोर्ट, भदोही वूल्लेन कार्पेट इंडस्ट्री, पार्ट- एक्स सी, सीरीज-22. पृष्ठ संख्या- १-३३.
3. सक्सेना, एस. सी. एंव बी. के. वर्मा. वी. के. भार्गवा. (१९८१). 'हेंडीक्राफ्ट सर्वे रिपोर्ट, कार्पेट क्राफ्ट ऑफ़ ओबरा विलेज, बिहार, पार्ट- एक्स डी, सीरीज-4. पृष्ठ संख्या- १-३६.
4. रवि, अपर्णा. (मार्च ३१- अप्रैल ६, २००१). 'कोम्बटिंग चाइल्ड लेबर विथ लेबल्स, केस ऑफ़ रुगमार्क. इकोनोमिक एंव पॉलिटिकली वीकली. वॉल्यूम नं ३६. नं.१३. पृष्ठ संख्या- ११४१-११४७.
5. टकर, ली. (२००६). 'चाइल्ड स्लेव्स इन माडर्न इन्डिया' नई-दिल्ली, द जॉन होपकिंस यूनिवर्सिटी प्रेस, २३ - ३६.
6. श्रीवास्तव, रवि. एस. & निखिल. राज. (२०००). 'चिल्ड्रेन ऑफ़ कारपेट लूम, ए स्टडी ऑफ़ होम बेस्ड प्रोडक्शन ऑफ़ कारपेट इन उत्तर-प्रदेश' एन एल आई रिसर्च स्टडीज सीरीज नं. ०११/२०००, पृष्ठ संख्या- ५४.
7. भान, आर. के. (१९३८). 'इकोनोमिक सर्वे ऑफ़ कार्पेट इंडस्ट्री इन कश्मीर'. श्रीनगर. वॉल्यूम नं. 2. पृष्ठ संख्या- 1-21.
8. गोस्वामी, के. के. (२०१३). 'प्रासेस कंट्रोल इन कार्पेट मैन्युफैक्चरिंग नई-दिल्ली. अभिषेक पब्लिकेशन. पृष्ठ संख्या- 11-17.
9. गोस्वामी, प्रोपा. (२०१५). 'परफॉरमेंस मेज़रमेंट ऑफ़ हैण्डमेड कार्पेट इंडस्ट्री' नई-दिल्ली, अभिषेक पब्लिकेशन. पृष्ठ संख्या- 11-31.
10. गोस्वामी, के. के. (२००९). 'एडवांसेज इन कार्पेट मैन्युफैक्चरिंग. नई-दिल्ली. वूडहेड पब्लिकेशन लिमिटेड. पृष्ठ संख्या- १३८-२६७.